(Pages : 4)

**E – 3768**

Reg. No. : .....

Name : .....

# Fourth Semester M.A. (Hindi) Degree Examination, July 2018
## HL 241 : MODERN POETRY SINCE PRAYOGVAD
## (2015 Admn. Onwards)

Time : 3 Hours

Max. Marks : 75

I. सही उत्तर चुनकर लिखें । **(10×1=10 Marks)**

1) प्रयोगवादी काव्यधारा का प्रारंभ कबसे माना जाता है ?
(1943, 1953, 1951, 1969)

2) धूमिल का असली नाम कौन-सा है ?
(सौमित्र मोहन, रघुवीर सहाय, कीर्ति चौधरी, सुदामा पाण्डेय)

3) 'नये इलाके में' किसकी कविता है ?
(अरुणकमल, अशोक वाजपेयी, अज्ञेय, धूमिल)

4) निम्नलिखित कृतियों में चन्द्रकान्त देवताले की कृति कौन-सी है ?
(बची हुई पृथ्वी, खूंटियों पर टंगे लोग, लकड़बग्घा हंस रहा है, कलसुनना मुझे)

5) ''तीसरा सप्तक'' का प्रकाशन कब हुआ ?
(1959, 1969, 1949, 1953)

6) धर्मवीर भारती किस सप्तक के कवि है ?
(तार सप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक, चौथा सप्तक)

7) निम्नलिखित कृतियों में कौन-सी अज्ञेय द्वारा रचित नहीं ?
(हरीघास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, आसाध्यवीणा, भीतरी नदी की यात्रा)

gcwcentrallibrary.in

8) 'कई बार' किसकी कविता है ?
(मुक्तिबोध, कात्यायनी, लीलाधर जगूडी, धूमिल)

9) 'नई कविता के प्रतिमान' किसकी रचना है ?
(लक्ष्मीकांत वर्मा, संतोष कुमार, ललित शुक्ल, अशोक बाजपेयी)

10) 1956 में प्रयोगवादी काव्यधारा के समकक्ष बिहार में विकसित काव्यधारा कौन-सी है ?
(अकविता, संघर्षकविता, प्रपद्यवाद, प्रगतिवाद)

II. किन्हीं **चार** पर टिप्पणियाँ लिखिए । **(4×5=20 Marks)**

1) 'ढाबा' कविता का प्रतिपाद्य क्या है ?

2) कीर्ति चौधरी की कविता 'एकलव्य' पर टिप्पणी लिखिए ।

3) अज्ञेय की कविता 'नदी के द्वीप' में अभिव्यक्त अस्तित्ववादी चेतना ।

4) 'ठण्डा लोहा' के शीर्षक का प्रतीकत्व पर विचारात्मक टिप्पणी लिखिए ।

5) 'गीतफरोश' में अभिव्यक्त रचनाधर्मिता की विवशता ।

6) धूमिल की कविता 'मतदाता' में अभिव्यक्त जनवादी चेतना ।

7) 'पुतली में संसार' में प्रतिबिम्बित कवि का दृष्टिकोण क्या है ?

III. किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिये । **(2×10=20 Marks)**

1) 'ब्रह्मराक्षस' कविता के संदर्भ में मुक्तिबोध के कवि-कर्म पर आलोचनात्मक विवरण दीजिए ।

2) प्रयोगवाद के प्रवर्तक के रूप में अज्ञेयजी की कविताओं का परिचय दीजिये ।

3) पठित कविताओं के आधार पर सर्वेश्वर दयाल सक्सेनाजी की कविताओं पर प्रकाश डालिए ।

4) 'मुट्ठी भर चावल' के प्रसंग में ओमप्रकाश वाल्मीकी की दलित-चेतना की अभिव्यक्ति पर प्रकाश डालिए ।

IV. किन्हीं **पाँच** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए । **(5×5=25 Marks)**

1) आगर में तुम को ललाती साँझ के नभ की अकेली तारिका
अब नहीं कहता,
या शरद के भोर की नीहार–न्हाई कुईं,
टटकी कली चम्पे की, वगैरह, तो
नहीं कारण कि मेरा हृदय उथला या सूना है
या कि मेरा प्यार मैला है ।

2) क्या फायदा इस बेकार के बोझ से ?
उतार दो जिरहबख्तर और फेंक दो ढाल
क्योंकि किसी और की नहीं
वह तुम्हारी ही तलवार होगी
जो एक दिन तुम्हारे वज्र शरीर को चीरती हुई
तुम्हारे हृदय में उतरेगी

3) मैं विलाप करता हूँ
सिर्फ कविता में
क्योंकि उससे बाहर विलाप और स्वप्न दोनों के लिए
अब कोई जगह नहीं बची

4) मैं आकाश में इतने ऊपर कभी नहीं उड़ा
कि स्त्री दिखाई ही न दे
इसलिए मैं उन लोगों के बारे में कुछ नहीं जानता
कि वे किस तरह सोचते हैं जो ईश्वर के पास रहते हैं
वैसे मेरी आत्मा आकाश में बहुत ऊँचे तक उड़ी हैं
पर डोर हमेशा किसी स्त्री के हाथ में रही
और सब जानते हैं कि औरत ज़्यादह ढील नहीं देती

5) पसीने से बचने के हज़ार उपाय करते हुए जीना
और फिर पसीना निकालने के लिए महँगी मशीन पर व्यायाम करना
अपव्यय नहीं बल्कि व्ययशक्ति और क्रयशक्ति का मामला है
वायुशक्ति में साँस लेते–लेते क्षीण होती हुई आयुशक्ति
उस सुंदर स्त्री की भी समस्या है
आदमी को पढ़ो

gcwcentrallibrary.in

6) क्या तुमने सुना कि यह
लोहे की आवाज़ है या
मिट्टी में गिरे हुए खून
का रंग ।
लोहे का स्वाद
लोहार से मत पूछो
उस घोड़े से पूछो
जिसके मुँह में लगाम है ।

7) ओ, मेरे अज्ञात, अनाम पुरखो
तुम्हारे मूक शब्द
जल रहे हैं
दहकता राख की तरह
राख : जो लगातार काँप रही है
रोष में भरी हुई ।

8) और...होठों से
अनोखा स्तोत्र, कोई क्रुद्ध मंत्रोच्चार,
अथवा शुद्ध संस्कृत गालियों का ज्वार,
मस्तक की लकीरें
बुन रहीं
आलोचनाओं के चमकते तार!!
उस अखण्ड स्नान का पागल प्रवाह...
प्राण में संवेदना है स्याह!!

9) मैं नया कवि हूँ–
इसी से जानता हूँ
सत्य की चोट बहुत गहरी होती है,
मैं नया कवि हूँ–
इसी से मानता हूँ–
चश्मे के तले की दृष्टि बहरी होती है,
इसी से सच्ची चोटें बाँटता हूँ
झूठी मुसकानें नहीं बेचता ।

ncwcentrallibrary.in